Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 3 | Dec. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियों में सांस्कृतिक ऱ्हास का चित्रण

अलोने चंद्रशेखर त्रिंब

हिंदी विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, रमाड, ता.जि. औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत,

सारांश :

संक्रमणशीलता के कारण हमारी सांस्कृतिक धरोहर को नुकसान पहुँचा है । विविध प्रभाव के कारण हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था संक्रमित हो रही है । जिसकारण ज्यादा हद तक सांस्कृतिक ऱ्हास हो रहा है । यही ऱ्हास किस गहराई से हो रहा इसे डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियाँ अभिव्यक्ति देती है । इसी अभिव्यक्ती को इस शोध पत्र द्वारा परखने का प्रयास किया है ।

प्रस्तावना :

शिक्षा से संस्कार होते हैं, संस्कार से संस्कृति बनती है । संस्कृति किसी एक घटना का परिणाम नहीं होती बल्कि समग्र जीवन का दर्पण होती है। संक्रमणशील ग्रामीण समाज में संस्कृति का ऱ्हास होने का कार है, आज की शिक्षा, उससे प्राप्त संस्कार और उससे बदली हुई नवशिक्षित नवयुवकों की मानसिकता । इन सब बातों का ऊहापोह डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर जी की कहानियों में किया गया है, इसे परखने का प्रयास हमने यहाँ किया है।

प्रथमत: हम संस्कृति शब्द को समझना चाहेंगे । 'संस्कृति' शब्द के अर्थ "संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता, चौबीस वर्णों के वृत्तों की संख्या आदि हैं ।"[१] जहाँ भारतीय संस्कृति की बात होती है वहाँ तो भारतीय सांस्कृतिक परम्पराएँ अद्वितीय है । भारतीय संस्कृति की मुख्य धारणाएँ हैं - धर्म, कर्म और जाति जो सामाजिक स्तरीकरण के अंतर्गत आती है । जहाँ तक परिवर्तन का संबंध है तो हम देखते हैं कि परिवर्तन सांस्कृतिक व्यवस्था के अंतर्गत हुआ है, न कि सांस्कृतिक व्यवस्था का । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कुछ संशोधनों को छोड़कर मूल रूप में सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य तथा मानक आज भी बने हुए हैं । धर्म, कर्म और जाति से जुड़े हुए मूल्य सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाओं का मार्गदर्शन करते हैं । इसलिए कहा जाता है कि, "परिवर्तन व्यवस्था में हुआ है न कि व्यवस्था का।"[२] इसलिए हमने उपर्युक्त परिछेद में कहा है कि, संस्कृति किसी एक घटना का परिणाम नहीं होती बल्कि समग्र जीवन तथा सामाजिक व्यवस्था का दर्पण होती है । इस संक्रमणशीलता के कार सामाजिक व्यवस्था में आमूलग्र परिवर्तन हो रहा है । जिस कारण संस्कृति का भी पतन धीरे-धीरे हो रहा है । इसी सांस्कृतिक पतन को पकड़ने की कोशिश दिवाकर जी अपनी कहानियों में करते हैं । इसे दे-ने ा प्रयास f या है ।

संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धती द्वारा लिखा गया है ।

Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 3 | Dec. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

□हानियों में सांस्कृतिक ऱ्हास का चित्रण

जहँ जोत बरय दिन राती :

इस कहानी में एक गायक कलाकार की स्थिति को हमारे सामने रखा गया है । नाम है उसका लँगडू । उसकी □ला □ो दबाने की कोशिश करती उसकी पत्नी 'कुसुमी' । लँगडू अपनी पहचानवाली बड़की कनियाँ के यहाँ बच्चे की छटी पर गाने बजाने जाता है इस बात का घुस्सा कुसुमी को आता है । कुसुमी का व्यक्तित्त्व स्वाभिमानी रहता है । वह मेहनत करके जीवन जीना पसंद करती है । वह लँगडू के इस व्यवहार को भी□ माँ□ना समझती है । लेकिन लँगडू अपनी कला की एहमियत जानता है और वह बड़की कनियाँ के यहाँ गाने बजाने जाता है । इस बात का घुस्सा कुसुमी को आता है तब वह लँगडू को ताकीद देती है □ भी□ माँगनी है तो यहाँ गाँव में क्या मांगते है उधर पटना कलकत्ता में जाओ, कहकर लँगडू को अपमानित करती रहती है । और वह अपनी खेतीबाड़ी में दिनरात मेहनत करके अच्छा जीवन बीताना चाहती है । लँगडू के गाने का शौक पुर्ण करने का इंतजाम वह घर पर ही करा देती है । पर लंगडू कुसुमी को समझाने की कोशिश करता है कि वह भीख नहीं माँग रहा है, बल्कि वह अपनी कला की कदर करता है और अपनी कला की कदर करनेवालो के पास ही जाता है । लेकिन कुसुमी कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं रहती है तो वह घुस्से से घर के बाहर चला जाता है कुसुमी उसे ढूँढते हुए आती है तो एक पेड़ के नीचे लँगडू उसे दिखाई देता है तब इन दोनों के बीच का संवाद बड़ा मजेदार है कि, 'घाट के इसी पार बरगद की छाँह में बैठा लँगडू दिख गया । शायद थककर सुस्ता रहा था । कुसुमी ठीक उसे सामने जाकर खड़ी हो गई, 'कहाँ जा रहे हो?' अपना चेहरा दूसरी ओर घूमाकर मिमियाते हुए लँगडू ने कहा, जाऊँगा कहा ? जा रहा हूँ पटना- कलकत्ता', 'कैसे जाओगे? खेवा खर्चा के लिए पैसे है पास में ?' लँगडू ने बिना नजर मिलाए, कारी कोशी की पतली-सी धारा की ओर देखते हुए कहा, 'भिखमंगे से कोई टिकट नहीं माँगता ।'

आ.की.. एकाएक फूट पडी कुसुमी "अरे करमघटुआ । शरम नहीं आई बोलेने में ? भीख माँ□□ रे ...? मेरा मरद भीख माँगेगा ? इसी दिन के लिए मेरे बाप ने तेरे हाथ में हाथ सौंपा था रे ? इसी दिन के लिए ? ... मैं क्या जानती थी कि तु सच में भिखमंगा है । मैं तो तेरा गुन देखती थी । देखती थी कि तु गुणवंत आदमी है । मन का देवता है तू ... क्या जानती थी कि... बोलते बोलते टूटकर रोने लगी कुसुमी । जार बेचार देर तक रोती रही । फिर सरापने लगी अपने आप को -

'मैं भी कैसी अभा□न थी । चली थी घर बसाने एक भिखमंगे को लेकर ... आग लगे घर दुआर में । बाग बगीचे में। मैं नहीं कहला सकती किसी भिखमंगे की मेहरारू । चली मैं भी अपने बाप-भाई के घर । कहीं भी तो मजूरी ही करनी है । तुम जाओ और भीख माँगों । इसी कारी कोशिश में मैं भी माँग धो लूँगी और कलेजे पर पत्थर रख लूँगी ...'

बिलख बिलखकर विलाप करती रही कुसुमी । फिर अपना बक्सा उठाया और पार पर लगी नाव की तरह जो बढ़ी कि लँगडू ने लपककर कलाई पकड़ ली । भर्राए गले से सिर्फ इतना कहा, 'कु-सु-मी ।...'

एक दूसरे से लिपटे हुए दोनों रो रहे थे, हाँलाकि रोने का अर्थ बदल गया था ।"[३]

इस प्रकार से प्रस्तुत कहानी में लँगडू कलाकार का अपने कला के प्रति प्रेम भाव और कुसुमी के स्वाभिमान को कहानीकार ने हमारे सामने रखा है । इसमें लँगडू अपनी कला के प्रति बड़ा ही आदर्शवादी है लेकिन पत्नी □ स्वभाव □ □ार□ उसे अपनी कला से अलग रहने की नौबत आती है । कुसुमी की अति स्वाभिमानी वृत्ति लँगडू की कला को समझ नहीं पाती है यही भाव इस कहानी में दिखाई देता है ।

दुर्घटना :

प्रस्तुत कहानी में शहरी संस्कृति का ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव बताया गया । कहानी की प्रमुख पात्रा हैं मैं की नानी, जो अपने दोनों बेटों के साथ कभी मुंबई तो कभी दिल्ली रहकर अपनी बेटी के यहाँ आती है । अपनी बेटी के यहाँ आने के बाद वह बेटी को हमेशा उसकी कमियों से उसकी पहचान करा देती है । मुंबई, दिल्ली जाने से पहले यही घर उसके लिए स्वर्ग प्रतीत होता था, ब्लॅक एण्ड व्हाइट टी.वी. की तब वह तारिफ करती थी लेकिन अब नानी का स्वभाव ही बदल चुका है । पहले वह टी.वी. पर किसी अश्लिल दृश्य को देखकर अपने पोतों को डाँटती थी लेकिन अब खुद ही पॉप गाने सुनती है । यह बदलाव मैं महसूस करता है । कहानी में इसका वर्णन बड़े ही सुन्दर शब्दों में आया है कि, 'नानी की बदली हुई चोतना का सबसे अच्छा

प्रमाण टी.वी. से मिलता था । टी.वी. को वह टामी कहती थी । मेरे घर में वही ब्लैक एण्ड व्हाईट टी.वी. सेट था जिसमें नौ-दस साल पहले नानी ने धार्मिक सीरियल देखे थे । उन दिनों यही टी.वी. सेट नानी को आश्चर्यजनक प्रतीत होता था, कहती थी, 'गाँव में ई-सब हइए नहीं है ? अब वही टी.वी. सेट देख नानी कहने लगी थी, 'रंगीन टीमी काहे को नहीं खरीद लेती हो रूकमिनी ?' रिमेटवाला टीमी खरीदना । मेरी बगल में खड़ी मेरी छोटी बहन स्नेहा मुस्कराती हुई धीरे से कहती थी, रिमेट नहीं नानी, रिमोट । रिमोट कंट्रोल ।...

डिश एंटीना का जाल वैसे मेरे कस्बे में भी फैल चुका था, लेकिन उसकी मुंबई-दिल्ली जैसी व्याप्ति तो संभव नहीं थी। नानी कहती थी, 'ई छोटका शहर में बेसी चलन (चैनल) नहीं है । दिल्ली-मुंबई में इतने चलन है जो मनचाहे सो देखो । चौबीसों घंटे । मैं झल्लाकार कहता था, यह कटिहार है नानी, दिल्ली-मुंबई नहीं है ।'

मेरे घर में 'ब्लैक एण्ड व्हाईट' टी.वी. पर नानी वे सारे प्रोग्राम देखती थी जो प्रोग्राम मेरी पीढ़ी पसंद करती है । पॉप म्यूजिक जैसा कोई कार्यक्रम शुरू होता तो मैं और स्नेहा यही समझते कि नानी अब टी.वी. के सामने से उठकर चली जाएगी, लेकिन नानी निमग्न भाव से कार्यक्रम देखती रहती थी । मारधाड़, हत्या, क्रूरता वाली फिल्मों के प्रति अब नानी में पहले वाली वितृष्णा नहीं थी । मुझे यह सब देख आश्चर्य होता था । मुझे याद आ रहा था कि एक बार इसी टी.वी. में नानी ने किसी फिल्म में बलात्कार वाला सीन देख लिया था तो कई दिनों तक बेचैन रही थी । मम्मी से उसने शिकायत की थी, 'ऐसी खराब-□राब फिल्म देखते हैं बच्चे । मना नहीं करती ?' पापा ने मुझे नानी की शिकायत पर खूब डाँटा था ।

वही नानी थी जो बड़े इत्मीनान से स्टार टी.वी., जी.टी.वी. आदि पर तरह तरह के दृश्य देख रही थीं । अधनंगी सुंदरियाँ के नाच-गाने, क्या मस्ती, क्या धूम । कोई पॉप म्यूजिक चल रहा था किसी चैनल पर । नानी ने डांसर को देखकर कहा, ई देवा है क्या ? मैं और स्नेहा नानी की बात सुनकर चकरा गए । नानी कैसे पहचान गई कि देवा है ? आश्चर्य यह देख□र हो रहा था कि, शाहरूख खान, मनीषा कोईराला और श्रीदेवी को ही नहीं, रवीना टंडन तक को नानी पहचान रही थी । लगान फिल्म को कोन द (जाने कौन सा) पुरस्कार (ऑस्कर) मिलते मिलते रह गया, इसका भी नानी को पता था ।"[४]

इस प्रकार से पूर्णतः नानी के स्वभाव, रहन-सहन बोलचाल में परिवर्तन दिखाई देता है । यह देखकर मैं आश्चर्य व्यक्त करता है। कहानीकार नानी के जीवन का और एक प्रसंग हमारे सामने रखते है । एक दिन नानी को अपने गाँव जाना होता है, रिक्शावाला नानी, मैं और मैं की माँ को गाँव ले जाता है । नानी रिक्शावाले के साथ बड़े ही व्यावहारिकता से पेश आती है । उसके हाथ में किराये का रूपया रखकर उसे डकैतीवाले खराब रास्ते से वापस जाने को कहती है । रिक्शावाले पिछली बात नानी को याद दिलाता है कि जो तुम ही थी मुझे रात होने के कारण मुक्काम से रखकर मेरी खातिरदारी की थी। रिक्शावाला वही है, रास्ता वही है जोखिम भरा, नानी वही है । लेकिन नानी का स्वभाव अब बदल चुका है - इस बदले हुए नानी के स्वभाव का वर्णन कहानीकार निम्न शब्दों में करते है, "रिक्शेवाला शायद उसी उधेडबुन में कुएँ की जगत के पास बैठा था । नानी दो-तीन औरतों के साथ आँगन से निकलकर बाहर आई और रिक्शेवाले को देखा तो बोली, 'अरे तु गया नहीं ? श्याम हो रही है' -ा-ी □ी इस बात से मेरे भीतर कुछ टुटकर बिखर गया - काँच की तरह । मैं भीतर से कराह उठा । मुझे याद आया कि पिछली बार जब मैं नानी के साथ आया था, इसी तरह शाम हो गई थी । रिक्शेवाला लौटना चाहता था, लेकिन नानी ने रोक लिया था। रात हो जाएगी, रूक जाओ यहीं । चोर-डकैत रहते हैं पुल के पास । मुझे याद है नानी ने रिक्शेवाले को नाश्ता कराया था, चाय पिलाई थी, दला-न में सोने □ी व्यवस्था □रवाई थी और रिक्शेवाले को मच्छर परेशान न करें, इसके लिए मच्छरदानी भी लगवाई थी । सबसे दिलचस्प बात रिक्शेवाले को खिलाने के समय हुई थी । लालपूर वाली रिश्ते की मामी जो नानी के घर की देखभाल करती थी, उसी ने खाना खिलाया था रिक्शेवाले को । नानी रिक्शेवाले के सामने परोसी गई थाली देखने गई थी और थाली में खीर न देख लालपुर वाली मामी को डाँटने-फटकारने लगी थी । डरकर लालपुर वाली मामी एक कटोरा खीर रख आई थी । रिक्शेवाले के सामने ।

रिक्शेवाले के कारण नानी रात -भर परेशान रही थी । मैं जब सोने जा रहा था, नानी ने मुझसे कहा था, 'जरा जागकर सोना छोटू । गाँव में चोरी बढ़ गई है । साइकिल तक उठाकर चोर ले जाते हैं । कोई रिक्शा का कुछ खोलकर ले न जाए । बेचारा गरीब मजदूर है । यही उसकी रोजी-रोटी है । रिक्शेवाले आराम से खर्राटे भर रहा था । अगले दिन हलवाहे ने बताया कि नानी उसको भी सचेत कर गई थी कि रिक्शा देखते रहना रात में ।'

दूसरे दिन सुबह दही-चिउडा खिलाकर और भाड़े में पाँच रूपये जोड़कर नानी ने रिक्शेवाले को दिया था । रास्ते के लिए गमछे में थोड़ा-सा सत्तू भी बाँध दिया था। रिक्शेवाला जाने लगा था, तब नानी ने कहा था, 'फिर कभी कटिहार से गाँव आना होगा तो तुमको खोजूँगी ।'

वही नानी थी जिसको मैंने कहते सुना, 'तु अभी तक यहीं है ? धुएँ जैसी फैलती साँझ में रिक्शेवाले ने नानी को गौर से देखते हुए कहा, जा रहे हैं माताजी । मुदा एगो बात पूछनी थी । रिक्शेवाला सुपारी के ठूँठ पेड़ों को देखता हुआ बोला, 'कुछ साल पहले एक बार हमही लाए थे आपको मिरचाई बाड़ी-चौलु से । आप बिसर गई माताजी, मुदा हमको याद है । हमको याद है। हमको अचरज हो रहा है माताजी कि दस-ग्यारह साल में ही ऐसा क्या हो गया की आप... ? 'मैंने रिक्शेवाले के चेहरे की तरफ देखा । मुझे लगा, वह रो देगा। नानी एकटक रिक्शेवाले को देखती रही ।"[५]

इस प्रकार से इन दो प्रसंगों से हमें कहानीकार ग्रामीण समाज के संस्कारों पर हो रहे आघातों को दर्शाने की कोशिश करता है । शहरी संक्रमण के कारण ग्रामीण संस्कृति का लोप हो रहा है । अतिथि, आदरातिथ्य और नैतिकता हमारी ग्रामीण संस्कृति की देन है लेकिन शहरी संक्रमण के कारण इसका लोप हो रहा है । अतिथि, आदरातिथ्य और नैतिकता में आज ग्रामीण जीवन में परिवर्तन हो रहा और इस परिवर्तन का प्रतिनिधित्त्व करती है कहानी की नायिका नानी ।

एक मामूली आदमी की मौत :

प्रस्तुत कहानी में एक रेल दुर्घटना के प्रसंग को रखा गया है। रेल दुर्घटना में खवासी टोले के सौखीलाल की मौत हो जाती है । जो नंदूबाबू के परिवार का खवास था । इस कारण नंदू बाबू के कहने पर नंदू बाबू की बेटी मालती के यहाँ कुछ काम हेतु भेजा गया था । लेकिन लौटते समय सौखीलाल की रेल दुर्घटना में मौत हो जाती है । सौखीलाल एक मामूली आदमी होने के नाते उसकी मौत पर गाँव के लोग जादा सोचते नहीं है लेकिन जब दो-चार दिन बाद रेडिओं पर खबर आती है कि मरनेवालो के परिवार को सरकार की ओर से एक लाख रूपये मुहावजे के रूप में दिये जाएँगे । तब गाँव में हलचल मच जाती है । गाँव के पटेल, पटवारी, सौखीलाल की पत्नी और बेटे धनेश्वर को एक लाख रूपये कैसे खर्च किए जाए इस बारे में सलाह देने जाते हैं । इस एक लाख रूपये के कारण गाँव में खलबली मच जाती है । बबुआन टोले के नंदूबाबू अपने कर्जे के बारे में सोचते हैं । खाली कागजात पर लिये गये सौखीलाल के अँगूठे के निशान खोजते हैं । इस प्रकार से नंदूबाबू सौखीलाल □ परिवार □ी मिल-नेवाले रूपये हड़पने की तैयारी में जुट जाते हैं । इस कारण उनकी रातों की नींद और दिन का खाना हराम हो जाता है । सौखीलाल का परिवार भी लखपति बन जाता है । यह स्थिति नंदू बाबू की नहीं गाँव के सभी लोगों की हो जाती है । इस बीच एक छोटी सी घटना हमें वह सब कुछ कह जाती है जिस पर सोचने के लिए हम मजबूर हो जाते हैं - 'रात हो गयी थी और वे अंधेरे में दरवाजे पर टहल लेने के लिए बुलावा आ चुका था, मगर उन्होंने भूख न होने की बात कहकर नौकर को लौटा दिया था । बड़□ी मालकि□-न समझ गयी थी कि बड़का मालिक किसी की बात को माननेवाले नहीं है । बस छोटा पोता राजू है जिसकी बात वे नहीं टालेंगे।'

बात सच भी है। आठ-नौ साल के पोते राजू को नंदू बाबू बहुत प्यार करते थे । राजू उन्हीं के साथ अक्सर सोता था । राजू न उनके बिना रह सकता था, न वे राजू के बिना ।

बड़की मालकीन ने इसी अचूक अस्त्र का इस्तेमाल करना चाहा। राजू को साथ लेकर बड़की मालकीन आंगन से निकली । देखा, बड़का मालिक धीरे-धीरे बड़े-से दरवाजे पर टहल रहे हैं । वे दहलीज के पास बैठ गयी। राजू अपनी दादी की पीठ पर 'घूघ्घू खेलने' के अंदाज में पड़ा झूल रहा था । उसने दादी से पूछा, क्यों दादी, दादाजी रूठे हुए है क्या ? क्यों रूठे हैं ? धनेसर को एक लाख रूपये मिलने वाले हैं, इसलिए न ?'

दादी ने पोते को मीठी-सी चपत लगाते हुए धीरे से कहा, 'नहीं रे पगले!'

हाँ दादी मैं समझता हूँ । मुझे पता है । मगर दादी, बूढ़े लोग भी रूठते हैं?

दादी हँसने लगी । हँसती -हँसती बोली, 'बड़ा लाल बुझक्कड़ बनता है रे तू ? भला वे क्या रूठेंगे ?' रूठे नहीं तो क्यों नहीं खाया अब तक ?'

दादी पोते को थपकिया देने लगी, मगर पोता था कि चुप नहीं हो रहा था, अच्छा दादी, सौखीलाल रेल में कटकर मर गया, इसलिए न धनेसर को एक लाख रूपये मिल रहे है ?'

दादी ने सिर हिलाया, हाँ रे । कितना बक-बक करेगा तू ?' 'अच्छा दादी, एक बात पूछू' पोते ने दादी की ठुड्डी पकड़कर उनका चेहरा अपनी तरफ घुमाना चाहा, 'पहले तो दादाजी जा रहे थे न मालती दीदी के ससुराल ! क्यों नहीं चले गये?'

दादी कुछ समझ नहीं पायी । यो ही टालने के लिए कह दिया, 'नहीं गये तो क्या हुआ । तुम्हारे अवेधश चाचा तो गये न ।'

राजू ने प्रतिवाद किया, 'सो तो गये, जानता हूँ, मगर दादाजी जाते तो कुछ और बात होती ।'

'क्या बात होती' दादी अंधेरे में पोते की ओर उन्मुख हो गयी ।

'दादाजी गए होते तो बिना सौखीलाल के लौटते नहीं और सौखीलाल के साथ वे लौटते तो वे भी रेल में कटकर मर जाते । फिर हम लोगों को भी एक लाख रूपये मिलते ।'

दादी ने पोते को धकेल दिया, 'कैसा कुलच्छन है ई बित्ते भर का छौड़ा।'

राजू रूसवा हो गया, 'मैं कहा कह रहा हूँ । रात पापा मम्मी से कह रहे थे कि दादाजी कर जाते तो अपने घर भी एक लाख रूपये आते । फिर एक लाख रूपये में कुछ जोड़कर कार खरीदी जाती । मंगल काका के पास कार है न ।... बाबूजी ही तो कह रहे थे कि दादाजी जीकर अब क्या करेंगे । बूढ़े हैं, मर जाते तो क्या हो जाता है ?'

दरवाजे पर टहलते हुए नंदू बाबू ने अपने लाड़ले पोते की बात सुनी और जहाँ खड़े थे वही बुत बने खड़े रहे ।"१४

इस प्रकार से प्रस्तुत प्रसंग के संवाद से हो रहे सांस्कृतिक विघटन स्पष्ट होता है । व्यक्ति जीवन में पैसा इतना महत्त्वपूर्ण बन गया है कि हमारे आदर्श, हमारी संस्कृति को वह एक झटके में काट दे रहा है । एक बेटे का अपने पिता के प्रति ऐसा संवाद वे सारे सांस्कृतिक आदर्श को जैसे 'मातृदेव भवः पितृदेव भवः' को नष्ट करते हुए दिखाई देता है । आज व्यक्ति अपने जीवन में पैसे को साधन नहीं, साध्य मान रहा है। संक्रमण के प्रभाव के कारण व्यक्ति लक्ष्मी का उपासक बन रहा है ।

निष्कर्ष :

ग्रामीण जीवन की संस्कृति का ऱ्हास शहरी संक्रमण के प्रभाव के कारण हो रहा है । गाँव का पढ़ा-लिखा नवयुवक वर्ग शहर के प्रति आकर्षित होकर भौतिक साधनों की जुगाड़ में लगा हुआ है । वह भौतिक साधनों को ही जीवन का साध्य मान रहा है । मानवीय संवेदनाओं का विकास हमारी संस्कृति की असली पहचान है। लेकिन शहरी संक्रमण के कारण मानवीय संवेदनाएँ कुंठित होती हुई दिखाई दे रही हैं । मातृः देवो भवः, पितृः देवो भवः, अतिथिः देवो भवः जैसे हमारे सांस्कृतिक आदर्श शहरी संक्रमण के कारण आज बदलते हुए दिख रहे हैं । संक्रमणशीलता के प्रभाव के कारण लोककला और लोकगीतों का ऱ्हास हो रहा है ।

संदर्भ :

१.आदर्श हिन्दी शब्दकोश, पृ. ७६०
२.भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन - के.एल. शर्मा, पृ. ५
३.माटी पानी - डॉ. रामधारीसिंह दिवाकर, पृ. ४९
४.वनाश्रम - डॉ. रामधारीसिंह दिवाकर, पृ. १३७
५.वही, पृ. १३८